आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 1/मार्च 2026

Received: 30/03/2026; Accepted: 31/03/2026; Published: 2/04/2026

*लेख*

# अनुवाद योगी डॉ. तिप्पेस्वामी : एक संस्मरण

**डॉ. करुणालक्ष्मी.के.एस.**

सहायक प्राध्यापिका एवं विभागाध्यक्षा

महाराणी महिला कला कॉलेज, मैसूर

**डॉ. करुणालक्ष्मी.के.एस., अनुवाद योगी डॉ. तिप्पेस्वामी : एक संस्मरण,** आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक 1/मार्च 2026**,(176 - 178)

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

डॉ. तिप्पेस्वामी जी का कर्नाटक के अनुवादकों में शीर्षस्थ स्थान है। हिंदी क्षेत्र में उनका आगमन उस समय हुआ, जब कर्नाटक में हिंदी भाषा अपना स्थान बना रही थी। उस दौर में हिंदी सीखना और उसका प्रचार-प्रसार करना राष्ट्रीयता की पहचान माना जाता था। कर्नाटक के लगभग प्रत्येक नगर में हिंदी प्रचार संस्थाएँ सक्रिय थीं और अपने असंख्य प्रचारकों के माध्यम से हिंदी के प्रसार में लगी हुई थीं। उस समय हिंदी को उत्तर और दक्षिण भारत को जोड़ने वाली एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में देखा जाता था।

डॉ. तिप्पेस्वामी जी का जन्म कर्नाटक के कोरटगेरे नामक एक छोटे से गाँव में हुआ। ऐसे ग्रामीण परिवेश में पले-बढ़े तिप्पेस्वामी जी को उनके मामाजी से हिंदी सीखने की प्रेरणा मिली। उनके मामाजी एक सच्चे गांधीवादी और देशभक्त थे। वे स्वयं हिंदी के ज्ञाता थे और अपने परिवार तथा मित्रों को हिंदी सीखने के लिए प्रेरित करते थे। उन्हीं के मार्गदर्शन में तिप्पेस्वामी जी ने हिंदी सीखी और आजीवन हिंदी सेवा में संलग्न रहे।

डॉ तिप्पेस्वामी जी ने अपने अध्यापन कार्य का आरंभ तिपटूर के कल्पतरु कॉलेज से किया। कुछ समय बाद उनकी नियुक्ति मैसूर विश्वविद्यालय में हुई। मैसूर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्राध्यापक तथा अध्यक्ष के रूप में कार्य करते हुए उन्होंने विश्वविद्यालय की गरिमा को बनाए रखा और अनेक कीर्तिमान स्थापित किए। 'सौहार्द सम्मान', 'केंद्रीय साहित्य अकादमी का अनुवाद पुरस्कार', 'कर्नाटक

साहित्य अकादमी पुरस्कार', 'हिंदीतर भाषी हिंदी लेखकों का राष्ट्रीय पुरस्कार', 'राष्ट्रीय हिंदी सेवी सहस्राब्दी सम्मान', 'भारतीय अनुवाद परिषद का द्विवागीश पुरस्कार' तथा 'साहित्य वाचस्पति' जैसे अनेक सम्मान उनकी प्रतिभा के प्रतीक हैं।

डॉ. तिप्पेस्वामी जी कन्नड़ और हिंदी दोनों भाषाओं के विद्वान थे। दोनों भाषाओं पर समान अधिकार रखने वाले इस सव्यसाची रचनाकार ने अपनी कृतियों के माध्यम से उभय भाषाओं के साहित्य को समृद्ध किया। मौलिक लेखन और अनुवाद—दोनों ही क्षेत्रों में उन्होंने उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की, परंतु अनुवाद उनका प्रिय क्षेत्र रहा और यही उनकी कीर्ति का प्रमुख माध्यम बना।

डॉ तिप्पेस्वामी जी का अनुवाद क्षेत्र में प्रवेश एक संयोग था। तिपटूर के कल्पतरु कॉलेज में अध्यापन करते समय उन्होंने अपने विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम में निर्धारित कई कहानियों का अनुवाद किया। उनकी भाषा की सहजता और बोधगम्यता के कारण ये अनुवाद अत्यंत लोकप्रिय हुए। इससे प्रेरित होकर उन्होंने पूर्ण निष्ठा के साथ इस क्षेत्र को अपनाया। प्रेमचंद जी का उपन्यास 'निर्मला' का अनुवाद उन्हें कर्नाटक में एक प्रतिष्ठित अनुवादक के रूप में स्थापित करने में अत्यंत सहायक सिद्ध हुआ।

मैसूर विश्वविद्यालय में अध्यापन करते हुए डॉ. तिप्पेस्वामी जी अपने विषय के साथ-साथ अनुवाद के महत्व को भी विद्यार्थियों को समझाते थे। उनके कक्ष में सदैव अनुवाद हेतु चयनित पुस्तकें उपलब्ध रहती थीं। वे प्रायः अनुवाद की रूपरेखा तैयार करने तथा प्रूफ रीडिंग में व्यस्त रहते थे। उनके बजाज स्कूटर की पेटी में हमेशा नई अनूदित पुस्तकों का एक बंडल रहता था।

वे अपने विद्यार्थियों से पुस्तकें खरीदकर पढ़ने का आग्रह करते थे। उनका मानना था कि घर में एक छोटा-सा पुस्तकालय होना विद्यार्थी की शोभा बढ़ाता है। वे विद्यार्थियों में अनुशासन तथा विषय के प्रति प्रेम विकसित करने पर विशेष ध्यान देते थे। योग्य विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करना और प्रेरणादायक विचारों के माध्यम से उनका उत्साहवर्धन करना उनके व्यक्तित्व का प्रमुख गुण था। किताबों के संबंध में उनका स्पष्ट मत था कि पुस्तकों को माँगकर या निःशुल्क प्राप्त कर पढ़ने की अपेक्षा उन्हें स्वयं खरीदकर पढ़ने से उनका मूल्य अधिक समझ में आता है। अगर किसी विद्यार्थी या कोई मित्र उनसे रेफेरेंस के लिए किताब माँगता तो वे तुरंत अपनी डायरी में उसे नोट कर लेते और सही समय पर उसे लौटाने की बात कहते।

डॉ. तिप्पेस्वामी जी का घर 'अनुवाद' मानो एक साहित्यिक साधना-स्थल था, जहाँ अनुवाद से संबंधित चर्चाएँ और गतिविधियाँ निरंतर चलती रहती थीं। संध्या समय वे घर के आँगन में बेंत की कुर्सी पर बैठकर अपने कार्य में तल्लीन हो जाते थे। उनकी पत्नी श्रीमती नागरत्ना जी ने उनके साधना-पथ में अमूल्य योगदान दिया। उन्होंने घर के समस्त कार्यों का इस प्रकार संचालन किया कि उनके कार्य में कभी कोई बाधा उत्पन्न न हो। समय-समय पर चाय, अल्पाहार और औषधि आदि का ध्यान रखते हुए उन्होंने अपने दायित्वों का आदर्श रूप में निर्वहन किया।

डॉ. तिप्पेस्वामी जी का अनुवाद कार्य गुणवत्ता और मात्रा की दृष्टि से अत्यंत व्यापक है। उनकी कार्य-प्रणाली भी अत्यंत अनुशासित और दीर्घकालीन थी—प्रथम प्रारूप तैयार करना, फिर स्वच्छ प्रति बनाना, उसके बाद प्रिंटिंग के लिए देना, और अनेक बार प्रूफ रीडिंग करके आवश्यक संशोधन करना। इस प्रकार एक-एक कृति में वर्षों का श्रम समाहित होता था। अपनी निरंतर साधना के कारण वे विशाल मात्रा में गुणवत्तापूर्ण अनुवाद करने में सफल हुए।

डॉ. तिप्पेस्वामी जी के लिए अनुवाद एक ध्यान और तपस्या के समान था। वे भाषा के प्रयोग और शब्दों के चयन में अत्यंत सावधानी बरतते थे। किसी भी प्रकार की व्याकरणिक या भाषिक त्रुटि उन्हें स्वीकार्य नहीं थी। वे अनुवाद में किसी प्रकार की जोड़-घटाव के विरोधी थे। उनका मूलमंत्र था—"न कुछ जोड़ो, न कुछ तोड़ो।" वे मूल लेखक की प्रत्येक पंक्ति और प्रत्येक शब्द को यथासंभव अनुवाद में सुरक्षित रखने का प्रयास करते थे। उनके अनुसार, यही वास्तविक अनुवाद है; अन्यथा वह केवल अनुसृजन बनकर रह जाता है। वे स्वयं अनुवाद करने के साथ-साथ अन्य साथियों और विद्यार्थियों को भी इसके लिए प्रेरित करते थे। अपने विभिन्न प्रकल्पों में नवोदित अनुवादकों को अवसर देकर उनका उत्साहवर्धन करते थे। उनके मार्गदर्शन से आज उनके अनेक शिष्य इस क्षेत्र में सक्रिय हैं जो कि अत्यंत खुशी की बात है।

**********